वाला मारा टाढली ते सहुने वाय, हरि अम विरहणियोने अगिन न माय।
ऊपर टाढो वावलियो धमण धमाय, ए रुत मूने सूतडा सूल जगाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह हवा सबको ठण्डी लगती है, पर हम विरहणियों से वियोग की अग्नि सही नहीं जाती और ऊपर से ठण्डी हवा के झोंके धौंकनी की तरह विरह की अग्नि को और भी भड़का रहे हैं। यह ऋतु मेरे भूले दुःखों को याद कराती है।

वाला महिनो मागसरियो मदमातो, ते तो अमने मारसे रे जोनी जातो।
तारा विरहनी रेहेसे रे वेराट मां वातो, अम ऊपर एम कां नाखी निघातो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

हे वालाजी! मस्ती से भरा मागसर (अगहन) का महीना आया है। यह तो हम विरहणियों को मार ही देगा। आपके विरह की बातें ही केवल संसार में रह जाएंगी। आपने हमें विरह की चोट पर चोट लगाकर अति दुःखी किया है, पर मैं तो फिर भी पिया-पिया की रट लगा रही हूं।

रे वाला मारा सियालो सुखणियो मागे, पिउजीना सुखडा मां सारी रात जागे।
वालाजीने विलसे रे वड भागे, अमने तो मंदिरियो मसांण थई लागे।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे मेरे प्रीतम! सुहागिन पत्नियां शरद ऋतु को मांगती हैं जिससे सारी रात प्रीतम के आनन्द में बीते। वह बड़ भागी हैं जो अपने पिया के साथ आनन्द लेती हैं। मुझे तो यह घर आपके बिना शमशान के समान लग रहा है। इसलिए मैं पिया-पिया करके पुकार कर रही हूं।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १२ ।।

।। सीत रुत ।।

राग मलार

वाला रुतडी आवी रे सीतलडी लूखी, वेलडियो वन जाय रे सर्वे सूकी।
वसेके वली वाले रे उतरियो फूकी, पिउजी तमे हजिए कां बेठा अमने मूकी।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे वालाजी खुश्क शीत ऋतु आई है। वन की बेलें और वन सब सूख गए हैं। खासकर उत्तर की हवाओं ने बेलों को जला दिया है। हे धनी! आप अभी तक मुझे क्यों छोड़कर बैठे हो? मैं तो पिया-पिया कहकर पुकारती हूं।

नाहोलिया निस्वासा धमण धमाय, हांरे मारा अंगडा मां अगिन न माय।
वाला तारी झालडियो केमे न झंपाय, पिउजी तारो एवडो स्यो कोप केहेवाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। २ ।।

हे धनी! मेरी सांस धौंकनी की तरह चल रही है। जिससे मेरे अंग में विरह की अग्नि समाती नहीं है। हे प्रीतम! आपके विरह की लपटें किसी तरह शान्त नहीं होती हैं। हे धनी! आपकी नाराजगी कैसी है? मैं तो पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

वाला मारा पोष महिनो रे आव्यो, हांरे अम दुखणियो ने दुख पूरा लाव्यो।
वेरीडो अम ऊपर आवीने झंपाव्यो, हांरे मारूं चीरी अंग मीठडे भराव्यो।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ३ ।।

हे वालाजी! पूस (पौष) का महीना आया है। हम दुखियों के लिए और दुःख लाया है। इस वैरी ने हमारे ऊपर इस बुरी तरह से झपट लगाई है मानो हमारे अंगों को फाड़कर नमक भर दिया है। हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला टाढी अगिननों वावलियो वाय, नीला टली सूकीने भाखरियो थाय।
पान फूल फल सर्वे झरी जाय, वाला अमे ए रुत केमे न खमाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ४ ।।

हे वालाजी! यह ठण्डी हवाएं अग्नि के समान लगती हैं। हरियाली सूखकर सूखी रोटी (पापड़) की तरह हो गयी है। वृक्षों से पत्ते, फूल और फल सब झड़ (गिर) गए हैं। यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।

वाला मारा आव्यो रे महिनो माह, जंगलियो वाले रे वनस्पति दाहे।
दाहनां दाधां रूखडियो केवा चरमाय, स्याम विना सुंदरियो एम सोहाय।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ५ ।।

वालाजी! माघ का महीना आया है। इसने जंगल और वनस्पति को अपनी ठण्ड से जला दिया है। आग की तरह ठण्ड से जले हुए वृक्ष जैसे सूख गए हैं। वैसे ही, हे पिया! आपकी विरहणियों की हालत हो गई है और वह पिया-पिया करके पुकारती हैं।

रे वाला मारे मंदिरिए आवी ने आरोग, हांरे अम विरहणियो ना टालो रे विजोग।
हां रे सुन्दर सेजडीनो आवी लेओ भोग, एता सकल तमारो संजोग।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। ६ ।।

हे वालाजी! मेरे घर में आकर भोजन करो और हम विरहणियों का वियोग हटाओ। आकर सुन्दर सेज का आनन्द लो। यह सब आपके मिलने पर ही सम्भव है। इसलिए, हे प्रीतम! मैं आपको पिया-पिया करके पुकार रही हूं।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १८ ॥

॥ वसंत रुत (फागुन-चैत्र) ॥

राग मलार

वाला मारा आवी रे रुतडी वसंत, चंद्र मुख अमृत रस रे झरंत।
वाला वनडू मोरयूं रे कूपलियो बारंत, एणे समे न आवो तो आवे मारो अंत।।
हो स्याम पिउ पिउ करी रे पुकारूं।। १ ।।

हे मेरे धनी! बसन्त ऋतु आई है और चन्द्रमा से अमृत की बूंदें बरस रही हैं। हे वालाजी! वन में नई-नई कोंपल निकल रही हैं। इस समय यदि आप नहीं आओगे तो मेरा अन्त हो जाएगा (मैं मर जाऊंगी)। इसलिए हे श्याम! मैं पिया-पिया करके पुकारती हूं।